मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 60, मई(प्रथम), 2019

फैशन

डॉ. मंजुला चौहान

अस्पताल से बाहर निकल ही रही थी कि किसी ने पीछे से आवाज दी कुमुद, कुमुद पिछे मुड कर देखा तो सावित्री चाची, मैं अपने बाग को ठीक से सरकाते हुए -

'अरे चाची आप ! यहाँ ?'

'हाँ, मैं कल ही आई हूँ ?'

'कैसी हैं आप ?'

'ठीक ही तो नहीं हूँ, इसीलिए आई हूँ यहाँ ।'

'क्या हुआ है ?'

'मुझे नहीं । शामली को दिखाना था ।'

'क्या हुआ उसे ?'

बोलने में थोडा हिचकिचाती है । कुमुद को याद आय पिछली बार गाँव गई थी तो शामली से मिली थी । उसे देखने के बाद मैंने तो अपने मूँह पर हाथ रख लिया था । वह इतनी दुबली पतली हो गई थी कि मैंने पूछ लिया ।

'शामली क्या हुआ है तुझे ?'

'मुझे क्या हुआ हौ दीदी'

'तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ?'

'हाँ'

'पर इतनी दुबली कैसे हो गई तुम'

'अच्छा तो मैंने दुबले होने का जूस पिया है ।'

'क्यों'

'क्यों मतलब पहले जब मोटी थी तो पूछते थे इतनी मोटी हो । आज दुबली हो गई हूँ तो अब पूछते हैं इतनी दुबली कैसे हो गई हो'

'नहीं शामली तुम जरूरत से ज्यादा पतली हो गई हो ।'

इसलिए पूछ रही हूँ ।'

'थोडे दिन की बात है, फिर नॉर्मल हो जाऊँगी ।'

'ठीक अपना खयाल रखना' कह मैं वहाँ से चली गई थी । वापिस लौटने पर उसके बारे में बहुत देर तक सोचती रही । फिर तीन महिने बाद आज अस्पताल में उसकी माँ से मिली हूँ । चाची रोने लगी 'बहुत समजहया यह सब सेहत के लिए सही नहीं है, पर उसके दिमाग पे तो भूत सवार था ।

पतला होने का । आज तबीयत बहुत बिगड़ गई है ।' कुमुद उसका हाथ पकड धीरज बांधते हुए 'कहाँ है वो'

'१० नंबर के कमरे में ले गये हैं कुछ टेस्ट कर रहे हैं'

'१० नंबर का कमरा रूको पूछती हूँ । कौंटर के पास जा पूछती है १० नंबर के कमरे में कौन सा टेस्ट होता है ।

'पूरे शरीर का टेस्ट होता है (MRI) 'क्यों पूछ रही हो' नर्स थोडे गुस्से से ही पूछती है ।

'हमारे एक रिश्तेदार को उसी कमरे में ले गये हैं ।'

चाची की आँखे भर आई । 'अरे चाची कुछ नहीं होगा उस टेस्ट के बाद ही ठीक से इलाज करेंगे डॉक्टर ।' चलो वहीं चलते हैं ।

दोनों उस ओर कदम बढाती है । दरवाजा खोल अंदर जाती है । वहाँ कुसी पर शामली बैठी थी । एल पल के लिए मैं डर गई उसे देख कर । मुझे लगा कोई बूढ़ी औरत बैठी है । उसी ने आगे बढ कर पूछा 'दीदी आप यहाँ?'

'ये क्या हालात बना रखी है ।'

'क्या करूँ दीदी पतला होने की होड में गोलिया, शरबत, क्या क्या नहीं किया । पतली तो हो गई पर शरीर में शक्ति ही नहीं है । खाना खाया नहीं जाता, सिर्फ पानी और पतली सी छाच, जैसी चीजे पी रही हूँ ।'

बोलते बोलते आँखे नस हो गई । कुमुद को बड़ा बुरा लगा । उसकी हालत पे बड़ा तरस आ रहा था । पर क्या करे तब उसने किसी की बात नहीं सुनी थी । सुन लेती तो शायद यहाँ नहीं होती । दिलासे के सिवा और दे भी क्या सकती थी । वह दे अस्पताल से बाहर निकली । पिंकु को इसके बारे में जरूर बताना चाहिए उसका भी दिमाग सिर्फ फैशन पर टिका रहता है । कुमुद जल्दि जल्दि घर की तरफ चल पड़ी पर दिमाग और दिल पर सिर्फ शामली छाई हुई थी ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें